ISSN : 2229-4767
RNI NO : 72297/99

अभिनव क़दम 47-48

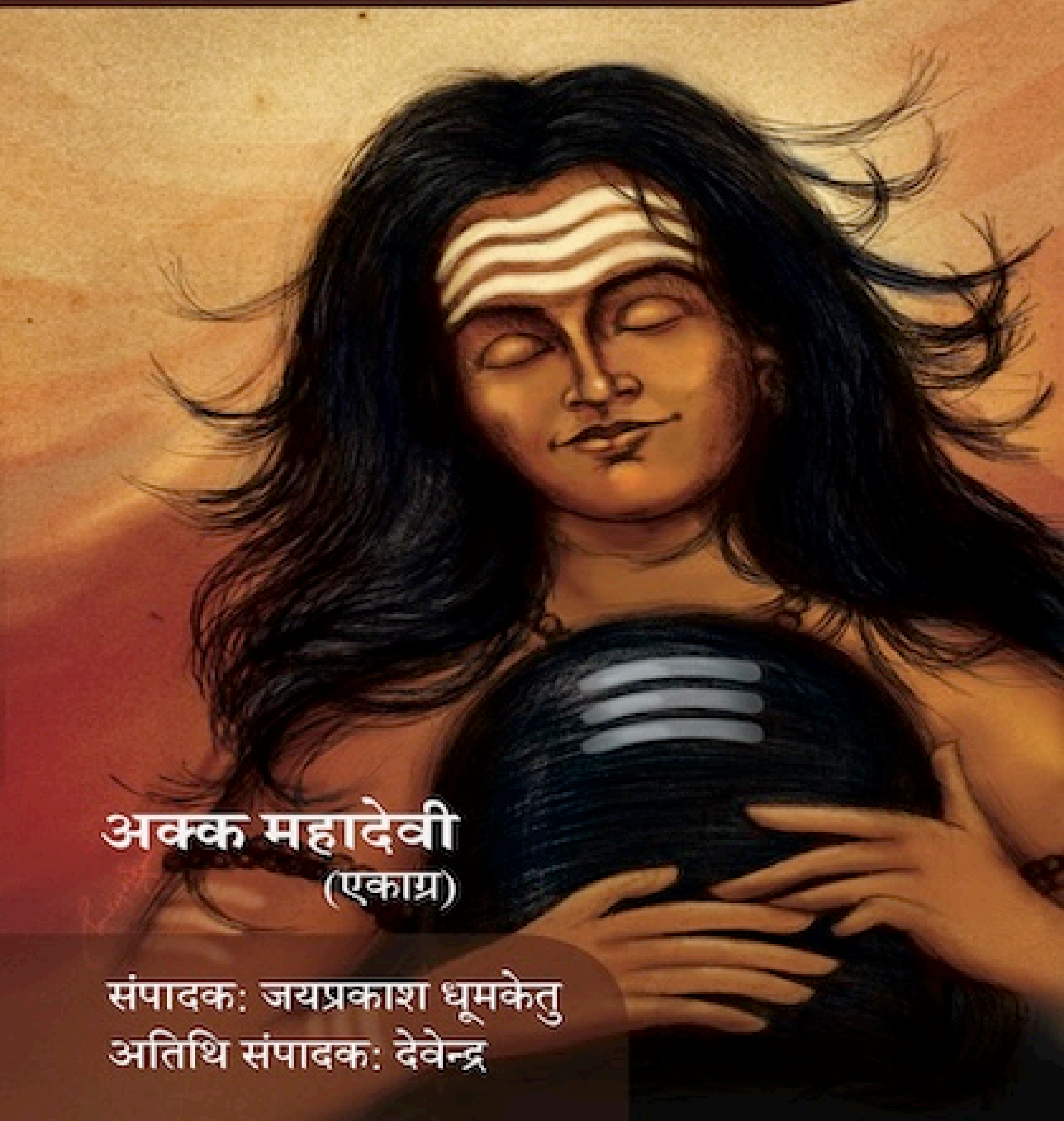

अक्क महादेवी
(एकाग्र)

संपादक: जयप्रकाश धूमकेतु
अतिथि संपादक: देवेन्द्र

अभिनव क़दम -47-48
(संयुक्तांक)

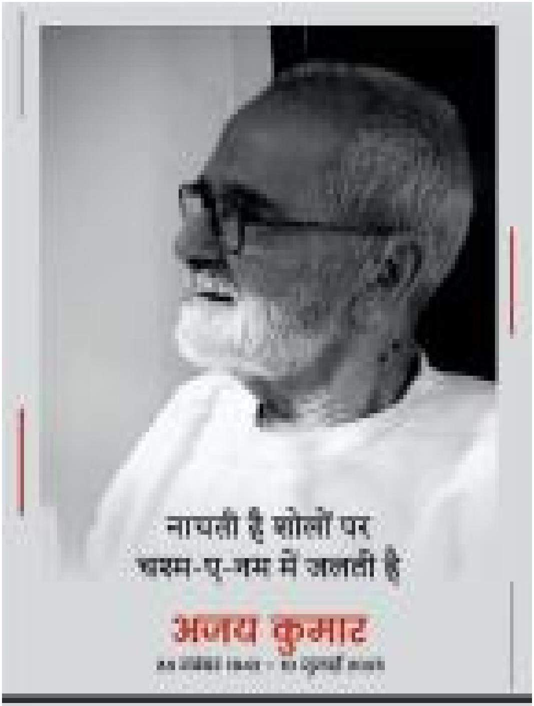

यह अंक कवि, अनुवादक, संस्कृतिकर्मी

अजय कुमार

की स्मृति को समर्पित है!

श्रद्धांजलि

अजय कुमार, नन्दू राम, अजीत राय, नीलकान्त, रतन थियाम, राजेन्द्र नाथ, न्युगी, शाजी एन. करुण, इरशाद खान सिकन्दर, का. अच्युतानन्दन, शमसुल हक चौधरी, रामू प्रसाद, रामप्यारे राय, उपेन्द्र प्रसाद, रामदरश मिश्र के प्रति अभिनव कदम की विनम्र श्रद्धांजलि।

अभिनव क़दम -47-48 *(संयुक्तांक)*

संपादक
जयप्रकाश 'धूमकेतु'
patrika.abhinavkadam@gmail.com
dhoomketu223@gmail.com

अतिथि संपादक
देवेन्द्र

उप संपादक
अमरेन्द्र कुमार शर्मा
amrendrakumarsharma@gmail.com

फार्म :: 4

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम के अन्तर्गत 'अभिनव कदम' नामक पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण–

1. **प्रकाशन**	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
2. **प्रकाशन की आवर्तिता**	:	अर्द्धवार्षिक
3. **मुद्रक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
4. **प्रकाशक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
5. **संपादक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
6. **उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्रिका के मालिक और कुल पूंजी के एक-एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं**	:	**राहुल सांस्कृत्यायन सृजन पीठ** साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन' 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.), पिन-275101

मैं जयप्रकाश धूमकेतु एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सही है। ***–जय प्रकाश धूमकेतु***

संस्थापक–संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, जन संस्कृति के पक्ष में जर्नल

वर्ष : 27 अंक : (47-48) (संयुक्तांक) जून 2022 - मई 2023

अभिनव क़दम (47-48) *(संयुक्तांक)*

संपादक : **जयप्रकाश धूमकेतु**
उप-संपादक : अमरेन्द्र कुमार शर्मा
अतिथि संपादक : देवेन्द्र
संपादक मण्डल : डॉ. अवधेश प्रधान
डॉ. गोपाल प्रधान, मनोज सिंह
डॉ. अमित राय, शिवकुमार पराग
आवरण चित्र : पंकज निगम
प्रसार व्यवस्था : **श्रीमती राजेश्वरी**

संपर्क :

'प्रकाश निकुंज'

223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)–275101
मोबाइल : 09415246755, 08429366755
ई-मेल : (i) patrika.abhinavkadam@gmail.com
(ii) dhoomketu223@gmail.com
(iii) amrendrakumarsharma@gmail.com
वेबसाइट : www.abhinavkadam.com, www.rahulsankrityan.com

सहयोग राशि

यह अंक	**300.00**
विदेश में	**$ 25**
आजीवन सदस्यता	**5000.00**

प्रकाशक : **राहुल सांकृत्यायन सृजन पीठ**, मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)
शब्द संयोजन : श्वेताजाब्स, 68 बहादुरगंज, इलाहाबाद E-mail : vs430186@gmail.com
मुद्रण : प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए-21, झिलमिल एंड, इंडस्ट्रीयल एरिया, शाहदरा, दिल्ली-95
e-mail: pd.press@gmail.com

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

संपादकीय

1. राग और आग की ज्योतिपुंजःअक्क महादेवी/जयप्रकाश धूमकेतु/1
2. अक्क महादेवी : एक अवलोकन/कर्मेन्दु शिशिर/7
3. अक्क महादेवी का यह पुनर्पाठ भक्ति परम्परा की पुनर्व्याख्या तक जाता है?/ विनोद शाही/19
4. अक्क महादेवी को रचते हुए/सूर्यनाथ सिंह/45
5. समय और समाज की चेतना से अनुप्राणित अक्क महादेवी की कविताएँ/ रोहिणी अग्रवाल/51
6. स्त्रियों के लिए एक रोशन सितारा दिगम्बर विद्रोहिणी अक्क महादेवी : सुभाष राय /हरियश राय/58
7. स्त्री के सत्य को आलोकित करती पुस्तक है अक्क महादेवी/श्री प्रकाश शुक्ल/68
8. वह क्या खोज रही थी? उसने क्या पा लिया था?/बाबुषा कोहली/81
9. मेरा वजूद, मेरा चुनावःअक्क महादेवी/पुरुषोत्तम अग्रवाल/85
10. अक्क महादेवी की दुनिया और उनका मनःलोकः एक अन्तःपाठीय संवाद/ अनामिका/93
11. भारत का भक्ति आंदोलन और अक्क महादेवी अर्थात हाशिये के मनुष्य के वचन/अनुराधा सिंह/102
12. दिगम्बर विद्रोहिणी अक्क महादेवीःविचार क्षितिज का विस्तार करती किताब/ श्री नारायण समीर/120
13. दिगम्बर विद्रोहिणी अक्क महादेवी, एक महत्वपूर्ण किताब/राजेश जोशी/129
14. दक्षिण की देह में महादेवी की आत्मा/डॉ. सुनीता/133
15. एक जिन्दा मशाल है अक्क महादेवी/सुभाष राय/146
16. एक नयी रोशन कन्दील/रविभूषण/168
17. अक्क और अण्डाल का हिन्दी में आना/नरेश सक्सेना/190
18. जल कर काली हुई देह या ज्योति सरीखी दमक रही है/ज्योतिष जोशी/198
19. अक्क महादेवीःएक युगान्तकारी स्वाधीन स्त्री/उषा राय/215
20. स्त्री की मुक्तिः मानवीय गरिमा की घोषणाःअक्क महादेवी/रामदेव शुक्ल/220

21. अक्क महादेवीःएक ज्योतित और शांत रौशन कन्दील/अनिल त्रिपाठी/250
22. एक बहुआयामी कृतिःदिगम्बर विद्रोहिणी अक्क महादेवी/अरुण होता257
23. दिगम्बर विद्रोहिणी अक्क महादेवी : चेलामल्लिकार्जुन की प्रेयसी की साधना और कविता/अवधेश प्रधान/266
24. दिगम्बर विद्रोहिणी अक्क महादेवी/विजय राय/272
25. अक्क महादेवी/नीलिमा पाण्डेय/278
26. आध्यात्म के सार्वजनीकरण का है महादेवी का संघर्ष/डॉ. अमित राय/282
27. भारतीय चिन्तन की स्त्रीवादी आवाज/डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा/293
28. कन्नड़ भक्ति आंदोलन और वीरशैव सम्प्रदाय परम्परा/डॉ. कमलकुमार/309
29. पहली ही नजर में महत्वपूर्ण और पढ़ने की उत्सुकता जगाने वाली किताब/ दिविक रमेश/326
30. दिगम्बर विद्रोहिणी-अक्क महादेवी : एक कवि के समालोचन की मिठास/डॉ. अमरनाथ/335

कन्नड़ लेखकों की कलम से—

31. हिन्दी में अक्क महादेवी कन्नड़ भाषियों के लिए गर्व की बात/डॉ. नागरत्ना के./340
32. अक्क महादेवी और मीराबाई की प्रतिरोध चेतना-एक विश्लेषण/डॉ. महेश एस./348
33. अक्क महादेवी का योग मार्ग/प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश अनुवाद : डॉ.टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी/357
34. अक्क महादेवी के वचनों में देह मीमांसा/डॉ. राधामणी अनुवादःडॉ. एच.एम. कुमार स्वामी/362
35. अक्क महादेवी की माया संबंधी अवधारणा/श्री बृजेश कुमार सिंहल/369
36. अक्क महादेवी और भक्ति आंदोलन/डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी/373
37. और अंत में/देवेन्द्र/380

संपादकीय

राग और आग की ज्योतिपुंज : विद्रोहिणी अक्क महादेवी

'' 'अक्क महादेवी' का संघर्ष उन सारी स्त्रियों का संघर्ष है जिन्हें स्वाधीनता और सामर्थ्य की तलाश है। वे अपने में अपने को छिपाती भी हैं और अपने में अपने को खोजती भी हैं। यह खोज अपने भीतर सबकी खोज है। यह खोज स्थापित परम्पराओं के प्रति एक अस्वीकार भी है। इसी अर्थ में यह एक तरह का सामाजिक विद्रोह भी है। यह बुद्ध ने भी किया, गोरख ने भी और कबीर ने भी। भक्ति की यह सामाजिकी अक्क महादेवी को एक 'विद्रोहिणी' की तरह प्रस्तुत करने का आधार देती है और मैंने उन्हें इसी नजरिये से खोजने और पाने का प्रयास किया है।''—सुभाष राय

हिन्दी पट्टी की साहित्यिक परिधि पर भक्ति आंदोलन को एक समाज सुधार आंदोलन के सांचे में व्याख्यायित करने का काम तो बहुत हुआ है, खासकर उच्च शिक्षा के पठन-पाठन और शोध के क्षेत्र में। यह तो सभी मानते हैं कि उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण से आये 'रामानन्द' से होती है। सगुन और निर्गुण भक्ति का सोता वहीं से फूटता है। हिन्दी पट्टी में सगुण और निर्गुण की दिशायें दो ध्रुवीय हो जाती हैं। तुलसी की सगुणमार्गी भक्ति धारा धर्मभीरू, सब कुछ ईश्वर की शरण में समर्पण कर भाग्यवादी-परम्परावादी होकर चुप हो जाती है और निर्गुण धारा तुलसी के उलट कबीर के रास्ते चल कर 'जो घर फूंके आपनों चले हमारे साथ' का अनुगामी बन जाती है। कबीर को समाज की चिन्ता होती है। समाज की बुराइयों को मिटाना चाहते हैं, उन्हें लुकाठी लेकर घर से निकलने में कोई परहेज नहीं। तुलसी और कबीर का द्वन्द्व ही समाज के भीतर का द्वन्द्व है। समाज के भीतर के इस द्वन्द को 12वीं सदी के कर्नाटक में बसवण्णा ने पहचान लिया था। उन्होंने उस समय की तमाम जटिल विकृतियों को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से वीरशैव आंदोलन की शुरुआत की।

श्री-शैलम्, अनुभव मण्डपम्-बसवण्णा-अल्लम प्रभु और अक्क महादेवी सबके सब दक्षिण भारत में वीरशैव आंदोलन के आधारभूत केंद्रीय बिन्दु है। 12वीं सदी में समता, स्वतंत्रता, न्याय, बन्धुत्व की मशाल जलाना वर्णव्यवस्था, जातिभेद,

पुरुषवर्चस्व को समापत करने का संकल्प लेकर संघर्ष में उतरना एक सामाजिक क्रांति नहीं तो और क्या है? जिस क्रांति की जमीन पर पुरुष और स्त्री दोनों समान रूप से संघर्ष में उतरते हैं, जिसके प्रणेता बसवण्णा और अल्लम प्रभु बनते हैं। उस दौर की सामाजिक संरचना को सुभाष राय रेखांकित करते हुए लिखते हैं—''12वीं सदी का समय अंधकार भरा समय था। चारों तरफ धार्मिक संकीर्णता का साम्राज्य था। धर्म की आड़ में आम लोगों पर, गरीबों पर, स्त्रियों पर, छोटी जातियों में जन्में लोगों पर भयानक अत्याचार अन्याय किये जाते थे।'' वास्तव में दक्षिण भारत का वीरशैव आंदोलन तत्कलीन समाज में वर्गीय चेतना के उभार का आंदोलन बना। जिसमें एक तरफ शक्तिशाली उत्पीड़क समाज था तो दूसरी तरफ उत्पीड़न का शिकार दमित समाज का बड़ा हिस्सा। राजशाही के दौर में ब्राह्मण और व्यापारी ही राज्य सत्ता के कर्णधार और शोषण उत्पीड़न के असली औजार थे। तत्कालीन सामाजिक विकृति को बसवण्णा ने अनुभूति के आधार पर करीब से पहचाना और वीरशैव आंदोलन की बुनियाद रखी। सुभाष राय अपनी पुस्तक विद्रोहिणी अक्क महादेवी में लिखते हैं—''वीरशैवों की भक्ति पारम्परिक भक्ति धारा से इस मामले में अलग थी कि वहाँ केवल आत्मानुसंधान ही काम्य नहीं था बल्कि सामाजिक परिवर्तन की जरूरतों के लिये युद्ध और संघर्ष भी काम्य था। वे 'अहम् ब्रह्मास्मि' और 'सोऽहम्' की जगह 'दासोऽहम्' को ले आये। सदियों से घरों में बंद पुरुषों की भोग्या बनकर आश्रित जीवन जीने वाली स्त्रियों के लिये यह स्वर्णकाल था। उनकी दृष्टि में कायक ही 'कैलास' है, श्रम ही स्वर्ग है। वे शरीर को गुरु के लिए, मन को लिंग के लिए और धन को जंगम के लिये मानते हैं।''

सामाजिक बदलाव के लिये किया गया कोई भी आंदोलन बिना जनधर्मी चेतना के संभव नहीं है। बसवण्णा ने इसी जनधर्मी चेतना के मूल स्वर की पहचान कर वीरशैव आंदोलन के अग्रधावक बनकर परिवर्तन की मशाल जलायी। सुभाष राय इस प्रयोगधर्मी चेतना की पहचान करते हुए लिखते हैं कि बसवण्णा सामाजिक बदलाव की संघर्ष यात्रा में—''दलित, शिल्पी, श्रमिक और मेहनतकश वर्ग की बहुत सारी स्त्रियाँ श्रेष्ठ वचनकारों में शामिल हुईं। यहाँ तक कि वेश्याओं और घृणित समझे जाने वाले चोरी-डकैती के पेशे से जुड़े लोगों के लिए भी इस मुक्ति आंदोलन के दरवाजे खुले थे, बशर्ते उनमें स्वयं की चेतना जाग्रत हो गयी हो।''

''वीरशैव आंदोलन एक तरह से स्त्री मुक्ति का आंदोलन था। इस आंदोलन ने स्त्रियों को पितृसत्ता से मुक्त किया ही, जाति सत्ता से भी मुक्त किया।''

'विद्रोहिणी अक्क महादेवी' कृति के कृतिकार सुभाष राय की विद्रोही चेतना और खोजी दृष्टि को तो मैंने तभी पहचान लिया था जब वे स्नातक शिक्षा ग्रहण करने हेतु हमारी कर्मभूमि परिसर में मेरे सम्पर्क में आये। 'यह मन कहाँ-कहाँ भटका है, जीवन जहर बहुत गटका है' की बुनियाद पर नीलकण्ठ बनने की चाहत में यायावरी की धुन के पक्के सुभाष की दक्षिण भारत की बार-बार की गई यात्राओं ने हिंदी साहित्य को एक जरूरी अनमोल कृति—'विद्रोहिणी अक्क महादेवी' के रूप में दिया। कन्नड़ साहित्य से हिन्दी साहित्य को जोड़ने के साथ-साथ सूदूर दक्षिण में 12वीं सदी के कबीर के पुरखों से भी हिन्दी के पाठकों से मुलाकात करायी। दाअसल बार-बार अपने आप को अतिक्रमित करते हुए शिव ही सत्य है या फिर सत्य ही शिव है की तलाश में निकले सुभाष 'कायक' और 'दासोह' तक पहुँचते हुए अपनी गोताखोरी में कामयाब होकर, अपने को अक्क महादेवी से एकाकार हो लक्ष्य संधान कर ही लेते हैं। वह लिखते हैं—''वे जन्मी ही थीं महादेवी बनकर अनुकूलता ने उन्हें तिक्ष्णता दी, प्रतिकूलता ने उनमें आँच भरी। वे पानी और आग से रची गई थी। ऐसा सौन्दर्य जो किसी को भी स्तम्भित कर दे, ऐसी सरलता जो किसी को भी चकनाचूर कर दे, हारने के लिए मजबूर कर दे। आरम्भ से ही एक प्रज्ज्वलित व्यक्तित्व। दृढ़ता की प्रतिमूर्ति।''

अपने समय-समाज से विद्रोह, अपनों से विद्रोह, अपने आप से विद्रोह किसी भी समय चेता कवि-विचारक की अपनी मूल थाती होती है, जिसे सहेजते-सँवारते हुए वह एक रचनात्मक आकार देता है, उसकी रचनात्मकता जमीनी स्तर पर सामाजिक बदलाव का आधार बन कर अपनी उपादेयता तय करती है। यही काम दक्षिण भारत में बसवण्णा, अल्लम प्रभु और अक्क महादेवी ने किया। उत्तर भारत में कबीर, नानक, फरीद, राहुल सांकृत्यायन, सहजानन्द सरस्वती आदि समयचेता महापुरुषों ने भी अपने समय में किया। सुभाष राय ने उसी श्रृंखला को ''विद्रोहिणी अक्क महादेवी'' के बहाने आगे बढ़ाने का काम किया है। 12वीं सदी की स्त्री मुक्ति चेतना 21वीं सदी में जारी है। अक्क महादेवी की वह संघर्ष यात्रा और उसकी निरन्तरता को स्त्री विमर्श के रूप में याद किया जाना चाहिये। एक अडिग ग्रेनाईट चट्टान की तरह दमकती चमक के रूप में अक्क महादेवी के व्यक्तित्व का अहसास भारतीय समाज को होता रहेगा। अनुभव मण्डपम् से कन्नड़ भाषा में बसवण्णा और अल्लम प्रभु के नेतृत्व में उपजा वीरशैव आंदोलन और उसकी कोख से उपजा भक्ति आंदोलन एक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति के रूप में खड़ा हुआ। महादेवी के साथ साठ की